राजेश जोषी की कविता : समकालीन समस्याओं के परिप्रेक्ष्य में

डॉ. आरिफ शौकत महात
सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभागाध्यक्ष
विवेकानंद कॉलेज, कोल्हापुर
9860857089
drmahatas@gmail.com

वर्तमान युग बड़ा गतिशील बन गया है। आज परिस्थितियाँ बड़ी तेजी से बदल रही हैं। इस बदलाव के कारण मनुष्य जीवन में काफी उथल–पुथल मची हुई है। वैश्वीकरण के कारण देश की सीमाएँ टूट चुकी हैं। आर्थिक उदारीकरण एवं बाजारीकरण के कारण पारिवारिक, सामाजीक, राजनीतिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक परिस्थितियों में आए बदलाव से विभिन्न समस्याओं ने जन्म लिया है। समकालीन साहित्य में समाज जीवन में आए इस बदलाव एवं इससे उत्पन्न समस्याओं को चित्रित किया गया है।

समकालीन कविता वर्तमान जीवन के यथार्थ के परतों को बड़ी सच्चाई एवं ईमानदारी से खोलती है। साथ ही इससे उलझ रहे मनुष्य की मानसिकता एवं उसमें आए बदलाव पर सटीक टिपणी करती है। यही कारण है कि इस युग की कविताओं में समकालीन जीवन से जुड़े सभी मुद्दों का बारिकी से चित्रण मिलता है। फिर चाहे वो पारिवारिक विघटन, सांप्रदायिकता, छद्म धर्मनिरपेक्षता, भ्रष्टाचार, बाजारीकरण, भुमंडलीकरण, बेरोजगारी, आर्थिक दरी, असंतुलित पर्यावरण, भाषावाद, प्रांतवाद आदि ही क्यों न हो।

हिंदी की समकालीन कविता के प्रमुख कवि के रूप में 'राजेश जोशी' का नाम सम्मान से लिया जाता है। समकालीन समय की नब्ज़ पकड़ना राजेश जोशी बेहतर जानते हैं। समाज जीवन में व्याप्त विसंगतियों को उन्होंने अपने काव्य का मुख्य विषय बनाया। वर्तमान समय में प्रचलित कोई भी विषय उनसे अछूता नहीं रहा है। देश में बच्चों के लिए शिक्षा को अनिवार्य बनाया गया है, वहीं देश में 'बाल मजदूरी' की समस्या गंभीर बनती जा रही है। बाल मजदूरी की समस्या पर राजेश जोशी अपनी कविता 'बच्चे काम पर जा रहे हैं' में मार्मिक व्यंग्य कसते हैं। वो सिर्फ व्यंग्य तक नहीं रूकते बल्कि इस समस्या को हल्के में लेने की हमारी प्रवृत्ति पर प्रहार भी करते हैं।

''बच्चे काम पर जा रहे हैं
हमारे समय की सबसे भयानक पंक्ति है यह
भयानक है इसे विवरण के तरह लिखा जाना
लिखा जाना चाहिए इसे सवाल की तरह '' [1]

हमारे देश का यह दुर्भाग्य रहा है कि यहाँ सांप्रदायिकता की लपटों को सत्ता का हवस कभी बुझने नहीं देती। आए दिन यहाँ संविधानिक धर्मनिरपेक्षता की हत्या होती है। सांप्रदायिकता की इस आग की लपटो में हमेशा आम आदमी ही झुलस जाता है। राजेश जोशी अपनी कविता 'वली दकनी' के माध्यम से गुजरात में घटित सांप्रदायिक दंगों की भयावहता को स्पष्ट करते हुए धर्म को लेकर हमारी दाम्भिक प्रवृत्ति का पर्दापाश करते हैं।

''एक मुल्क में
गुजरात नाम का एक सूबा था
जहाँ अपने हिंदू होने के गर्व और मुर्खता में डूबे हुए क्रुर लोगो ने.....
पूरे संरक्षण में हज़ारों लोगों की हत्याएँ कर चुके थे

और बलात्कार की संख्याएँ जिनकी याददाश्त

की सीमा पार कर चुकी थी'' [2]

राजेश जी ने अपनी इस कविता में 'वली दकनी' जो हिंदी और उर्दू के साझी विरासत के कवि थे के माध्यम से हमारी छद्म धर्मनिरपेक्षता एवं धार्मिक दंभ पर करारा व्यंग्य कसा है।

सांप्रदायिकता का रंग हम पर कुछ इस कदर चढ़ता है कि फिर उसके आगे कुछ नज़र नहीं आता। दंगों में मिटती इन्सानियत, मनुष्यता के साथ होता अत्याचार आदि पर कवि कटाक्ष डालते हैं। और फिर एक चुभती हुई बात छोड़ जाते हैं कि अगर दंगों में मनुष्यता के गुण त्यागकर दानव बने इन्सान से अगर बचना है तो 'पागल' बनना बहुत जरूरी है। क्योंकि दंगाइयों के लिए इन्सान या तो हिंदू होता है या फिर मुसलमान लेकिन पागल का कोई मज़हब नहीं होता।

''पन्द्रह सोलह बरस की उस लड़की के कपड़े

जगह–जगह से फटे हुए थे

तभी दंगाइयों का एक गिरोह आया

और उनमें से एक जोर से चिल्लाया

ए लड़की तू हिन्दू है या मुसलमान

तब आपस में जैसे एक दूसरे को सूचना देते

दंगाइयों ने कहा

पागल है साली एकदम पागल।'' [3]

आज हमारी सभ्यता, संस्कृति, राष्ट्रवाद बस दिखावा बन चुके हैं। बाजारवाद एवं उपभोक्तावाद के इस युग में हर चीज़ बिकाऊ बन चुकी है। आज हर जुमले की हक़िकत राजनीतिक स्वार्थ एवं आर्थिक चकाचौंध बन चुकी है। यहाँ नारे देश की जनता के लिए नहीं बल्कि उसमें इसे उलझाये रखकर अपना स्वार्थ निकालने का माध्यम बन चुके हैं। भाषा, संस्कृति, धर्म एवं राष्ट्र को हथियार बनाकर हमारे भावनाओं से खेलना इनका पसंदिदा काम बन चुका है। इसी कारण राजेश जोशी कहने के लिए मज़बूर हो जाते हैं–

''पानी को वाटर कहने से डूबने लगती है जिनकी संस्कृति की नब्ज

उन्हें गंगा के साबुन में बदल जाने से कोई एतराज नहीं।

महानुभावों वो कुछ भी बेच सकते हैं

क्रांतिकारी गीतों का बना सकते हैं पॉप साँग

बेच सकते हैं एक साथ वंदे मातरम् और कॉलगेट की मुस्कान

हानिकारक है संविधान की समीक्षा इतिहास परिषद पर मंडराता खतरा

और सबसे हानीकारक है उसका राष्ट्रवाद।'' [4]

सच में वर्तमान समय को ध्यान से परखे तो यह स्पष्ट हो जाएगा कि इस छद्म राष्ट्रीयता ने आम भारतीय को और उसकी राष्ट्रीयता को ही कटघरे में खड़ा कर दिया है। ये वो विष बेल है जो धिरे–धिरे हमें खोखला बनाए जा रही है। अगर इसे जड़ से न उखाड़ा जाए तो इसके परिणाम बड़े गंभीर होंगे इसमें कोई शक नहीं।

जोशी जी बढ़ता बाजारवाद और उससे उपजती समस्याओं पर भी प्रहार करते हैं। इस बाजारवाद ने अपनी कक्षाएँ विस्तृत कर ली है। इसके गिरफ़्त में हर कोई फस चुका है। इसने हमारे अर्थतंत्र को पहले ही चपेट में लिया है अब ये हमारी सभ्यता, भाषा, हमारे सपनों पर भी पहरा लगाये बैठा है।

''बाजार पहले ही चुरा चुका था हमारी जेब में रखे सिक्कों को
और अब वह सौदा कर रहा था हमारी भाषा
और हमारे सपनों का।'' [5]

इस प्रकार बाजार का हम पर हावी होना यकिनन खतरे के संकेत हैं। बाजारवाद मीठा जहर बन चुका है जो धिरे–धिरे हमें विनाश की तरफ ले जा रहा है लेकिन अफसोस इस बात का है कि हम इससे अंजान इसमें ही उलझते जा रहे हैं।

जोशी जी वर्तमान समस्याओं पर भाष्य करने वाले कवि हैं। वर्तमान समय की हर समस्याओं से वो हमें रू–ब–रू कराते हैं। साथ ही उसकी गंभीरता को भी स्पष्ट करते हैं। वर्तमान समय में पर्यावरण में होता बदलाव हमारे लिए खतरे का संकेत है। प्रकृति से की गई छेड़खानी हम पर ही भारी पड़ती जा रही है। अब तो ये अक्सर कहा जाता है कि अगला विश्वयुद्ध अगर कभी हुआ तो वह 'पानी' को लेकर होगा। हाल ही में हमारे देश ने सूखे की मार को रहा है। पीने के पानी के लिए तरसते हुए आम जन एवं उनकी परेशानियों को हम आए दिन देखते हैं। दिन–ब–दिन पानी की समस्या गंभीर बनती जा रही है। इस समस्या पर भी जोशी जी अपनी कविता 'किस्सा उस तालाब का' में प्रकाश डालते हैं –

''वह फकत पानी नहीं था
कि जिसे पी पीकर किसी को कोस लेता
उससे मुँह धोना सम्भव न था न कुल्ला करना
वह खरीदा हुआ था और मँहगा भी
उसका हर घूंट हलक से उतरते हुए
एक सिक्के की तरह बजता था।'' [6]

वर्तमान समय में फैली इन तमाम समस्याओं के बावजूद वह निराश नहीं होते। और नाही निराश होने की बात करते हैं। वे आशावादी हैं। वक्त के बदलने पर उन्हें विश्वास है। निराशा से वह हर एक को बचने की सलाह देते हैं। वो जानते हैं कि इसकी चपेट में आने के बाद कोई नहीं बचता। अतः हमें इससे सतर्क रहने की आवश्यक्ता है।

''निराशा एक बेलगाम घोडी है
भागना चाहोगे तो भागने नहीं देगी
घसीटते हुए ले जाएगी
और न जाने किन जंगलों में छोड़ आएगी।'' [7]

निष्कर्षतः कह सकते हैं कि राजेश जोशी जी आम आदमी के पक्षधर कवि हैं। समाज जीवन में व्याप्त हर विसंगती पर आपने कटाक्ष डाला है। उनका मानना है देश का हर काम आम आदमी करते हैं लेकिन खास मौको पर वो इत्यादि बन के रह जाते हैं। इनकी पहचान अक्सर छिपाई जाती है। यही कारण है कि वो अपनी कविता 'इत्यादि' में कहते हैं कि इन आम जन का चित्रण सिर्फ कुछ सिरफिरे कवियों की कविता में मिलता है। और इन सिरफिरे कवियों के पेहरिश्त में राजेश जोशी प्रथम पंक्ति में नजर आते हैं। वास्तव में जोशी जी 'मुक्तिबोध' के परंपरा के कवि हैं। वो अभिव्यक्ति के खतरों को उठाना बेहतर जानते हैं

वो भी बिना अंजाम की पर्वा किए। इसी कारण उनका कविताओं में हर उस पक्ष पर प्रहार हुआ है जो आम जन के हित के खिलाफ़ हो, इन्सानियत के खिलाफ़ हो। यही वजह है इनकी कविताओं में राजनीतिक विसंगती, धार्मिक कट्टरता, छद्म धर्मनिरपेक्षता, बाज़ारवाद, उपभोक्तावाद संस्कृति, पर्यावरण के साथ होता खिलवाड़ आदि पर मार्मिक व्यंग्य देखने मिलता है।

संदर्भ :

1. गुगल, कविता कोश, राजेश जोशी की कविताएँ।
2. गुगल, कविता कोश, राजेश जोशी की कविताएँ।
3. राजेश जोशी– चाँद की वर्तनी, पृ. सं. 68–69।
4. राजेश जोशी– चाँद की वर्तनी, पृ. सं. 91।
5. राजेश जोशी– चाँद की वर्तनी, पृ. सं. 85।
6. राजेश जोशी– चाँद की वर्तनी, पृ. सं. 26।
7. गुगल, कविता कोश, राजेश जोशी की कविताएँ।